

इस अंक में...

9 | काल्पनिकता से यथार्थ की ओर

10 | समसामयिकी घटना संग्रह

11 | समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

19 | आर्थिक घटना संग्रह

- प्रधानमंत्री मोदी ने राजस्थान के बाड़मेर में ऑयल रिफाइनरी परियोजना का शुभारम्भ किया
- सीएसओ ने राष्ट्रीय आय के प्रथम अग्रिम अनुमान जारी किए
- आरबीआई ने ₹ 10 के नोट की नई सीरिज जारी की

23 | राष्ट्रीय घटना संग्रह

- प्रथम प्रवासी सांसद सम्मेलन नई दिल्ली में आयोजित निर्देशित बम और बराक मिसाइलों की खरीद को मंजूरी
- महाराष्ट्र में अनाथ बच्चों को सरकारी नौकरियों में 1 प्रतिशत आरक्षण
- बिहार गरीब राज्य और जैन समुदाय सबसे समृद्ध

28 | अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह



- इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की भारत यात्रा संपन्न
- आसियान-भारत प्रवासी भारतीय दिवस समारोह का आयोजन
- इजरायल ने यूनेस्को की सदस्यता छोड़ने की घोषणा की

32 | खेल खिलाड़ी

- विराट कोहली आईसीसी वनडे क्रिकेटर ऑफ द ईयर चुने गए



- विदर्भ पहली बार दिल्ली को हराकर बना रणजी चैम्पियन
- वेस्टइंडीज करेगा 2018 महिला विश्व ट्वेंटी-20 की मेजबानी

35 | महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

लेख

- 39 | सामाजिक लेख—(i) आरक्षण और राजनीति
- 40 | (ii) मानव जाति का भविष्य एवं चुनौतियाँ
- 41 | नवीन तकनीकी लेख—नवीन संकल्पनाएं: चक्रिय अर्थव्यवस्था तथा ऊर्ध्वाधर खेती
- 43 | संवैधानिक लेख—समान नागरिक संहिता : देश के हित में
- 86 | प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता
- 87 | तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-95 का परिणाम
- 89 | रोजगार अवसर

हल प्रश्न-पत्र

- 45 | रेलवे भर्ती बोर्ड गैर-तकनीकी (एनटीपीसी) परीक्षा, 2016
- 53 | मध्य प्रदेश पुलिस आरक्षक (जनरल ड्यूटी) भर्ती परीक्षा, 2017
- 61 | झारखण्ड एस.एस.सी. इण्डिया रिजर्व बटालियन सामान्य आरक्षी भर्ती परीक्षा, 2017
- आगामी स्टेट बैंक लिपिकीय संवर्ग (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष तर्कशक्ति परीक्षा
- 67 | संख्यात्मक अभियोग्यता
- 71 | English Language-IBPS Bank Clerk (Pre.) Exam., 2016
- 76 | आगामी उत्तर प्रदेश पुलिस कॉस्टेबिल भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे-इलेक्ट्रॉनिक, मेकनीकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी 'सक्सेस मिरर' की नहीं है.

○ सम्पादक : महेन्द्र जैन
○ रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11-ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा-2
○ सम्पादकीय ऑफिस
1, स्टेट बैंक कॉलोनी, वन चेतना केन्द्र के सामने
आगरा-मथुरा बाईपास, आगरा-282 005
फोन- 4053333, 2531101, 2530966
फैक्स- (0562) 4053330
ई-मेल: सम्पादकीय: publisher@pdggroup.in
कस्टोमर केयर: care@pdggroup.in

○ पटना ऑफिस
पारस भवन (प्रथम तल),
खजांची रोड,
पटना- 800 004
फोन- 0612-2303340
मो- 09334137572

○ हैदराबाद ऑफिस
16-11-23/37, मूसारामबाग, टीगन गुडा आर.
टी.ए. ऑफिस के सामने मेन रोड
(आन्धा बैंक के बगल में), हैदराबाद-500 036
(तेलंगाना) फोन- 040-24557283

○ लखनऊ ऑफिस
B-33, ब्लॉक स्ववायर, कानपुर
टैक्सो स्टैण्ड लेन, मवईया,
लखनऊ- 226 004
फोन- 0522-4109080
मो- 09760181118

○ दिल्ली ऑफिस
4845, अंसाही रोड, वरियागंज,
नई दिल्ली-110 002
फोन- 011-23251844/66

○ कोलकाता ऑफिस
H-3, ब्लॉक-B, म्यूनिसिपल प्रीमिसेस No.
15/2, गालिफ स्ट्रीट, पी.एस. श्यामपुकर,
कोलकाता- 700 003 (W.B.)
फोन- 033-25551510

○ हल्द्वानी ऑफिस
8-310/1, ए. के. हाउस
हीरानगर, हल्द्वानी,
जिला-नैनीताल- 263 139
(उत्तराखण्ड)
मो- 07060421008

○ इन्दौर
30-31, जिन्सी हाट मैदान,
बाबा रामदेव मंदिर के निकट
मलहारगंज
इन्दौर- 452 002 (म.प्र.)
फोन- 9203908088

○ नागपुर ऑफिस
1461, जूनी शुक्रवारी,
सक्करदरा रोड, हनुमान
मन्दिर के सामने,
नागपुर-440 009 (महाराष्ट्र)
फोन- 0712-6564222
मो- 09370877776

काल्पनिकता से यथार्थ की ओर



—साध्वी वैभवश्री 'आल्मा'

सफल होना उतना स्वाभाविक है कि हम जितना कुछ जानते हैं उतना कुछ अपना क्यों नहीं पाते. जीवन में वह सब परिवर्तन, परिलक्षित क्यों नहीं हो पाता. जानते बहुत अच्छी-अच्छी बातें हैं, अच्छी-अच्छी बातें कर भी लेते हैं, किन्तु जहाँ तक परिवर्तन की बात है वहाँ तक केवल वाणी ही बदलती है व्यवहार तो नहीं कदाचित् व्यवहार बदलता भी है तो ऊपरी तौर पर, भीतर से तो वैसा ही कुछ चल रहा होता है तो ये परिवर्तन आखिरकार आता कैसे है. प्रश्न उठा, प्रश्न उठना भी बहुत बड़ी बात है अब इसका जवाब खोजो, अपने ही अन्दर कि आप जिस परिवर्तन को लाना चाहते हो वाकई में उस परिवर्तन के प्रति आपके मन में आस्था कितनी है हमें अपनी कमजोरियों पर आस्था ज्यादा है या अपनी उस परिवर्तनशील मूर्ति पर जोकि हम अपने भीतर देखना चाहते हैं. हम सब लोग अपने भीतर श्रद्धा, प्रेम, करुणा, आनन्द, ज्ञान, अनाशक्त स्वभाव ऐसा कुछ देखना चाहते होंगे या सफलता, आत्मविश्वास, सद्भाव, सहयोग, अन-आलस्य हो सकता है कि हम अपने भीतर बहुत कुछ अच्छे गुण देखना चाहते हों, लेकिन क्यों नहीं देख पाते क्योंकि हमारे भीतर में जो कुछ कमजोरियाँ हैं. मानसिक कमजोरियाँ. हम उन कमजोरियों को बहुत ज्यादा महत्व देते हैं. बहुत गहरे में हम जिनसे सम्बद्ध है न वो तो हैं. कमजोरियाँ और जो चाहते हैं वह है सद्गुण अब जो चाहते हैं वह मिलता नहीं और जिनसे हम सम्बद्ध है वही हमारे साथ बना रहता है. यही हमारी गड़बड़ी तो नहीं है. कहीं पहचानना जरा हम सब लोग अपने भीतर में अपनी किसी कमजोर प्रतिमा को बिल्कुल सच मानते हैं और जो गुणयुक्त प्रतिमा है, जो आनन्दयुक्त प्रतिमा है. वो प्रतिकृति उसके प्रति हमेशा सोचते हैं कि ऐसा होना चाहिए. अर्थात् हम अच्छी चीजों को तो चाहिए की भाषा में रखते हैं और बुरी चीजों को ऐसा है ही इस भाषा में

रखते हैं. अब देखो जो है ही जो विश्वास में आ चुका है. वह तो जीवन में बना रहेगा और जो चाहिए की भाषा में है वो जीवन से थोड़ी दूरी बना करके रखिएगा जैसे कि कितने ही लोग गुरुओं के पास जाते हैं. सतत् जाते हैं तो वे क्या कहते हैं, गुरुदेव आपका आशीर्वाद चाहिए, गुरुदेव आपसे ज्ञान चाहिए, गुरुदेव मेरा भी कल्याण होना चाहिए. अच्छा कोई कहेगा धन चाहिए, कोई कहेगा मान चाहिए, कोई कहेगा प्यार चाहिए, कोई कहेगा एकता बनी रहनी चाहिए. ये सारी चाहिए की भाषा बताती है कि अभी है नहीं भविष्य में ऐसा सब कुछ होना चाहिए तो आस्था तो उस पर नहीं हुई आस्था किस पर है कि कितना भी कर लो लड़ाइयाँ तो बनी रहती हैं कितना भी कर लो कमजोर तो मैं हूँ ही, कितना भी कर लो जरासी बात पर मुझे गुस्सा आ ही जाता है. यानी अपनी कमजोरियों पर तो है आस्था ज्यादा सम्बद्धता, ज्यादा निकटता ज्यादा और अच्छाइयों को हमेशा हमने चाहिए की भाषा में रख रखा है. यानी वो हमारी एक काल्पनिक प्रतिकृति है. एक काल्पनिक प्रतिमा है जिसको कि हम कभी न कभी अपनी जिन्दगी में लाना चाहते हैं, बुरी बात तो नहीं कि लाना चाहते हैं, लेकिन इससे बुरी बात क्या होगी कि हमेशा ही हम चाहते हैं कि भाषा में सोचते हैं वो है हमारे भीतर ऐसा ही देख पाते. यानी अपनी कमजोरियों पर भरोसा ज्यादा और सद्गुणों पर भरोसा कम. सद्गुण मुझमें है. मैं उन सद्गुणों के स्वभाव वाला ही हूँ. दुर्गुण तो दत्तक हैं, उधार लिए हुए हैं, काल्पनिक हैं, प्रभाव हैं, खत्म ही हो जाने वाला है, अच्छे गुण ही मेरा स्वभाव है. ऐसी आस्था जब तक गहराई से न हो तब तक सुने हुए ज्ञान की बातें, बोली हुई बातें यथार्थ नहीं हो पातीं, प्रभावित नहीं हो पातीं. आओ जरा अपने भीतर झाँक करके अपनी कमजोरियों से जो जिनसे हम निकटता से जुड़े हुए हैं. उसको हटाएँ और जो चाहिए की भाषा में

है उसको चाहिए की भाषा में न रखकर वो है ऐसा महसूस करना प्रारम्भ करें और तब हम अपने आपको मजबूत महसूस करेंगे, आनन्दमय महसूस करेंगे, आशीर्वादमय महसूस करेंगे मुझ पर बहुत कृपा है ऐसा महसूस करेंगे सब मेरा सहयोगी ऐसा महसूस करेंगे और वह सतत् अपनी जीवन यात्रा में जागृति से आगे बढ़ रहा हूँ. हर पल मैं नया हूँ, हर पल मेरे भीतर बहुत प्रेम, बहुत ज्ञान, बहुत आनन्द, बहुत सुख है. ऐसा महसूस करना स्टार्ट करें जितना-जितना हम अपने अच्छे स्वरूप में शुद्ध स्वरूप में स्थापित होंगे उतना ही अशुद्ध स्वरूप हमें अपना नहीं प्रतीत होगा और जो अपना प्रतीत नहीं होगा वो छोटी तो हो जाएगा.